10

स्त्रीप्रत्यय - ङीप् प्रत्यय

यहाँ स्त्रीप्रत्यय प्रकरण के आदि में ही वर्णित जो आठ प्रत्यय हैं उनमें ङीप् प्रत्यय भी प्रमुख है। उसके विधायक अनेक सूत्र हैं। उनमें–ऋन्नेभ्यो ङीप् उगितश्चः वयसिप्रथमे, द्विगोः, ''वर्णादनुदान्तान्तोपधात् तो नः'', ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठवउञ्कञ्क् वरपः ये सूत्र यहाँ मुख्य रूप से चिन्तन करने योगय हैं। और उनके यहाँ व्याख्यान प्रस्तुत किये गये हैं–

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- ङीप् प्रत्यय को जान पाने में;
- ङीप् प्रत्यय किस प्रातिपदिक से होता है यह जान पाने में;
- ङीप् प्रत्ययान्तशब्द को जान पाने में;
- ङीप् प्रत्यय के संयोजन से शब्दपरिवर्तन को जान पाने में;
- ङीप् प्रत्यय का संयोजन करके स्त्रीलिङ्ग शब्दों के निर्माण कर पाने में;
- पठन पाठन काल में जहाँ-जहाँ शब्दों में ङीप् प्रत्यय है अथवा नहीं है यह सुस्पष्ट जान पाने में।

(10.1) ''ऋनेभ्योङीप्'' (4.1.5)

सूत्रार्थः–ऋदन्त प्रातिपदिक से और नान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।

टिप्पणियाँ

सूत्रावतरण–यहाँ टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ये छः मुख्यस्त्री प्रत्यय हैं। उनमें ङीप् प्रत्यय भी एक है। उस प्रत्यय के विधान के लिए भगवान् पाणिनी ने ऋनेभ्यो ङीप् सूत्र की रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीप् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद हैं। ऋन्नेभ्यः यह पञ्चमी बहुवचनान्त पद है। ङीप् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। यहाँ सूत्र में स्त्रियाम् (7/1) यह अधिकार आ रहा है। और ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् (5/1) सूत्र की अनुवृत्ति भी आती है।

''प्रत्ययः'' (1/1) अधिकार और ''परश्च'' अधिकार यहाँ आ रहा है। ऋन्नोभ्यः यह पद समस्त (पूरा) है। और यहाँ इतरेतरयाग द्वन्द समास है। और उसका यहाँ विग्रह है ऋत् च नश्च इति ऋन्न, तेभ्यः, ऋन्नेभ्यः। एवं इसका अर्थ है ऋदन्त नान्त। वहाँ ऋतः यह और नात् प्रातिपदिकात् इसका विशेषण है। इसके बाद ''येन विधिस्तदन्तस्य'' इस सूत्र से तदन्त विधि होती है। उससे ऋदन्तात् प्रातिपदिकात् नान्तात् और प्रातिपदिकात् प्राप्त होता है। और उसके बाद सूत्र का अर्थ है–''ऋदन्त प्रातिपदिक से और नान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–कर्त्री, दण्डिनी।

सूत्रार्थ समन्वय

कर्त्री

यहाँ कर्तृ शब्द ऋदन्त है और ''कृन्तद्धितसमासाश्च'' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञक भी है। कर्तृपद ऋदन्त प्रातिपदिक है। उससे स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ''ऋन्नेभ्यो ङीप्'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे कर्तृ ङीप् होता है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों का लोप होता है। उससे कर्तृ ई स्थिति होती है। इसके बाद पर को ''इको यणचि'' सूत्र से यणादेश होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर कर्त्री रूप सिद्ध होता है।

दण्डिनी

यहाँ दण्डिन् शब्द नान्त है और ''कृत्तद्धितसामासाश्च'' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञक भी है। दण्डिन् शब्द नान्त प्रातिपदिक है। उससे स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ''ऋन्नेभ्योङीप्'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे दण्डिन्+ङीप् होता है। इसके बाद ''लशक्वतद्धितेः'' इस सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र उन दोनों का लोप होता है। उससे दण्ड्डन्+ई स्थिति होती है। इसके बाद पर वर्णसम्मेलन होने पर दण्डिनी रूप सिद्ध होता है।

(10.2) ''उगितश्च'' (4.1.6)

सूत्रार्थ–उगित अन्त वाले प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से ङीप् प्रत्यय का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद होते हैं। उगितः पञ्चमी एक वचनान्त पद है। च अव्यय पद है। यहाँ ऋन्नेभ्यो ङीप् सूत्र से ङीप् सूत्र से ङीप् की अनुवृत्ति आती है। यहाँ सूत्र में स्त्रियाम् (7/1) अधिकार आ रहा है। और ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् (4/1) की अनुवृत्ति आती है। प्रत्ययः (1/1) यह अधिकार और परश्च अधिकार यहाँ आता है। उगितः यह पद समस्त (सम्पूर्ण) है। और यहाँ बहुव्रीहि समास है। और उसका विग्रह होता है–उक् इत् यस्य सः उगित्, तस्य उगितः। वहाँ उगितः पद प्रातिपदिकात् पद का विशेषण होता है। और उसके बाद ''येन विधि स्तदन्तस्य'' इस सूत्र से यहाँ तदन्तविधि होती है। उससे उगिदन्तात् प्रातिपदिकात् प्राप्त होता है। इसके बाद सूत्र का अर्थ होता है–''उगित प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–पचन्ती। भवन्ती।नमन्ती।पठन्ती।पतन्ती

सूत्रार्थ समन्वय

पचन्ती–पच् धातु ''वर्तमानेलट्'' सूत्र से लट् प्रत्यय होने पर पच् लट् होता है। इसके बाद लट् के स्थान पर ''लटःशतृशानचावप्रथमासमावाधिकरणे'' सूत्र से शतृ प्रत्यय होने पर पच् शतृ होने पर शकार की ''लशक्ततद्धिते'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' सूत्र से लोप होने पर ऋकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से लोप होने पर पच्+अत् होता है। इसके बाद शतृ शित् से ''तिङ्शित्सार्वधातुकम्'' इस सूत्र से सार्वधातुक संज्ञा होने पर ''कर्त्तरिशप्'' सूत्र से शप् प्रत्यय होने पर पच् शप् अत् होता है। इसके बाद शकार की ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से लोप होने पर पकार की ''हलन्त्यम्'' सूा से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से लोप होने पर पच् अ अत् होता है और इसके बाद ''अतो गुणे'' सूत्र से पररूप होने पर पचत् सिद्ध होता है। वहाँ शतृ प्रत्यय की ऋकार की इत्संज्ञा होती है। उससे शतृप्रत्यय उगित् है। और इसके बाद पचत् शब्द उगिदन्त है। और ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' सूत्र से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा भी होती है। उससे पचत् उगिदन्त प्रातिपदिक है। अतः उगिदन्त प्रातिपदिक से पचत् इससे ''उगितश्च'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे पचत् ङीप् होता है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों का लोप होता है। उससे पचत् ई होता है। इसके बाद ''शप्श्यनोनित्यम्'' सूत्र से नुम् आगम होने पर पचन्त ई स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर पचन्ती रूप सिद्ध होती है।

भवन्ती

भू धातु से ''वर्तमानेलट्'' सूत्र से लट् प्रत्यय होने पर भू लट् होता है। इसके बाद लट् के स्थान पर ''लटः शतृशानचाव प्रथमासमानाधिकरणे'' इस सूत्र से शतृ प्रत्यय होने पर भू शतृ होने पर शकार का ''लशक्वतद्धिते'' इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' सूत्र से लोप होने पर ऋकार की ''उपदेशेऽजनुनासिकइत'' इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' सूत्र से लोप होने पर भू अत् होता है। इसके बाद शतृ के शित्व से ''तिङ्शित्सार्वधातुकम्'' सूत्र से सार्वध ातुक संज्ञा होने पर ''कर्न्तरिशप्'' इस सूत्र से शप् प्रत्यय होने पर भू शप् अत् होता है। इसके

टिप्पणियाँ

बाद शकार की ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से इत्संज्ञा होने पर, ''तस्यलोपः'' सूत्र से लोप होने पर भू अ अत् होता है। और इसके बाद शप् का भी शित्व सार्वधातुक से ''सार्वधातुकार्धधातुकयोः'' सूत्र से भू के ऊकार का गुण होने पर ओकार में ''एचोऽयवायावः'' सूत्र से अव् आदेश होने पर भत् अ अत् होने पर ''अतो गुणे'' सूत्र से पररूप होने पर भवत् सिद्ध होता है। यहाँ शतृप्रत्यय की इत्संज्ञा होती है। उससे शतृप्रत्यय उगित् है। और इसके बाद भवत् शब्द उगिदन्त है। और ''कृत्तद्धित समासाश्च'' सूत्र से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होती है। इससे भवत् शब्द उगिदन्त प्रातिपदिक है। अतः उगिदन्त प्रातिपदिक से भवत् से ''उगितश्च'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे भवत् ङीप् होता है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों का लोप होता है। उससे भवत् ई होता है। इसके बाद नुमागम होने पर और अनुबन्धलोप होने पर भवन्ती रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार अन्य उदाहरण ही इस प्रकार सिद्ध होते हैं।

(10.3) ''वयसिप्रथमे'' (4.1.20)

सूत्रार्थ–प्रथमवयवाचक अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीप् प्रत्यय का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद होते हैं। वयसि यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। प्रथमे सप्तमी एकवचान्त पद है। यहाँ ''ऋन्नेभ्योङीप्'' सूत्र से ङीप् (1/1) पद है और ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अत् (1/1) पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ सूत्र में ''प्रथमे'' यह ''वयसि'' पद का विशेषण है। और वयसि प्रातिपदिक से इसका विशेषण होता है। उससे प्रथमवयवाचक से अर्थ आता है। अतः प्रातिपदिकात् इसका विशेषण होता है। और इसके बाद ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्तविधि होता है। उससे अदन्त प्रातिपातिपदिकात् अर्थ होता है। और इसके बाद सूत्रार्थ होता है–''प्रथमवयवाचक अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है प्राणियों के कालकृत अवस्था विशेष वय है। और वय तीन प्रकार की होती है। कौमारं, यौवनं, वार्धकम्।

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।
पुत्रस्तु स्थाविरे भावे न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति॥

एक स्त्री के बारे में कहा गया है कि बचपन में पिता रक्षा करता है। यौवनकाल (जवानअवस्था) में पति रक्षा करता है बुढ़ापे में पुत्र सहारा होता है इसी प्रकार स्त्री कभी भी स्वतंत्र नहीं है। यह शास्त्रवचन प्रमाण है। कुछ आचार्यों के मत में आयु चार प्रकार की होती है–उसी प्रकार पद्य है–

आद्ये वयसि नाद्यीतं द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये न तपस्तप्तं चतुर्थे किं करिष्यति॥

इसी तीन प्रकार की होती है अथवा चार प्रकार की होती है। प्रथम अवस्था तो कुमार्यावस्था ही होती है। उदाहरण:–कुमारी, वधूरी, चिरन्टी।

सूत्रार्थ समन्वय

कुमारी

कुमार शब्द अदन्त है और प्रातिपदिक भी है। उसी प्रकार प्रथम वय में विद्यमान शिशुवाचक भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में प्रथमवयवाचक अदन्त कुमार शब्द प्रातिपदिक ''वयसिप्रथमे'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे कुमार ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। और ''तस्यलोप:'' सूत्र से उन दोनों का लोप होता है। उससे कुमार ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से कुमार की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर कुमारी रूप सिद्ध होता है।

(10.4) ''द्विगो:'' (4.1.21)

सूत्रार्थ–अदन्त द्विगुसंज्ञक से प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीप् प्रत्यय का विधान करता है इस सूत्र में एक ही पद है। ''द्विगो:'' पञ्च्यम्यन्त पद है। यहाँ ''ऋन्नेभ्योङीप्'' सूत्र से ङीप् (1/1) पद है, और ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अत: (4/1) पद की अनुवृत्ति आती है। यहाँ पर सूत्र में ''स्त्रियाम्'' (6/1) अधिकार आता है। और ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' (4/1) पद की अनुवृत्ति होती है। प्रत्यय (1/1) और ''परश्च'' अधिकार यहाँ आ रहा है।

यहाँ सूत्र में ''द्विगो:'' यह प्रातिपदिकात् इसका विशेषण होता है। और इसके बाद ''येन विधि स्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्त विधि होती है। उससे अदन्त प्रातिपदिक से यह अर्थ होता है। और इसके बाद सूत्रार्थ होता है–द्विगुसंज्ञक अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–त्रिलोकी। त्रिपादी। अष्टाध्यायी। पञ्चवटी चतु:सूत्री। दशरथी। पञ्चमी। पञ्चलक्षणी।

सूत्रार्थ समन्वय

त्रिलोकी

त्रिलोक शब्द में द्विगु समास है। उसी प्रकार त्रयाणां लोकानां समाहार: इस विग्रह में ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' सूत्र से समास होता है। इसके बाद ''संख्यापूर्वो द्विगु:'' सूत्र से उसकी द्विगु संज्ञा होती है। इसी प्रकार त्रिलोक शब्द अदन्त है। और प्रातिपदिक है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में द्विगुसंज्ञक अदन्त त्रिलोक प्रातिपदिक से ''द्विगो:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे त्रिलोक ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की

टिप्पणियाँ

इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। और ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों का लोप होता है। उससे त्रिलोक ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से त्रिलोक की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्थेति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर त्रिलोकी रूप सिद्ध होता है।

(10.5) ''वर्णादनुदात्तान्तोपधान्तोनः''

सूत्रार्थ–वर्णवाचक तोपध अनुपसर्जन से अनुदातान्त अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङीप् प्रत्यय होता है और तकार के स्थान पर नकार होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीप् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में चार पद हैं। वर्णात् पञ्चभ्यन्त पद है। अनुदात्तात् यह पञ्चम्यन्त पद है। तोपधात् यह पञ्चभ्यन्त पद है। तः यह षष्ठयन्त पद है। नः प्रथमान्त पद है। यहाँ सूत्र में ''ऋन्नेभ्योङीप्'' सूत्र से ङीप् (1/1) पद की अनुवृत्ति होती है। ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अतः (4/1) पद की अनुवृत्ति होती है। ''मनोरौ वा'' इस सूत्र से विकल्प से अव्यय पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ सूत्र में ''स्त्रियाम्'' अधिकार आता है। और ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' (4/1) की अनुवृत्ति होती है। ''प्रत्ययः'' (1/1) और ''परश्च'' यह अधिकार यहाँ आ रहा है। तोपधात् यह समस्त पद यहाँ है। यहाँ बहुव्रीहिसमास है। उसी प्रकार तः उपधा यस्य सः लोपधः (त है उपधा में जिसके) तस्मात् तोपधात्। यहाँ सूत्र में अनुदान्तात् यहाँ पर और अतः यहाँ पर तदन्त विधि होती है। अनुदान्तात् से अनुदान्तान्तात् यह अर्थ है। अतः का अदन्तात् (अदन्त से) यह अर्थ होता है। वर्णात् पद, तोमधात् पद, अनुपसर्जनात् पद और प्रातिपदिकात् पद इसके ही विशेषण हैं। उससे सूत्र का अर्थ होता है–''वर्णवाची, तोपध अनुपसर्जन अनुदातान्त अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङीप् प्रत्यय होता है और तकार के स्थान पर नकार होता है।

उदाहरण–एनी एता। रोहिणी रोहिता। श्येनीश्येता। हरिणी हरिता।

''सूत्रार्थ समन्वय''

एनी, एता

यहाँ पर एत शब्द है। यहाँ चित्रवर्ण का वाचक है। पुनः इस शब्द के उपधा में तकार है। अतः यह शब्द तोपध भी है। एत इस शब्द के अन्त्य अकार अनुदात है। अतः यह शब्द अनुदातान्त भी है। अनुपसर्जन भी है। पुनः अदन्त भी है। और अपि प्रातिपदिक भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में वर्णवाचक तोपध अनुदातान्त अनुरार्जन अदन्त एत प्रातिपदिक से ''वर्णादनुदात्तातोपधातो नः'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है और तकार का नकार होता है। उससे एन ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों का लोप होता है। उससे एनई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से एन की भ संज्ञा होती है। और उससे ''यस्थेति च'' सूत्र से अन्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन में एनी रूप सिद्ध होता है। और

इसी प्रकार ''वर्णादनुदान्तान्तोपधातोन:'' यह सूत्र से विकल्प से प्रवृत्त होता है। जब इस सूत्र की प्रवृत्ति नहीं होती है तब एत के अदत्त स्त्रीत्व विवक्षा में ''अजाद्यतत्यप्'' सूत्र से टाप् प्रत्यय होने पर एता रूप सिद्ध होता है।

रोहिणी, रोहिता

यहाँ रोहित शब्द है। यह रक्त वर्ण का वाचक है। पुन: इस शब्द के उपधा में तकार है। अत: यह शब्द तोपध भी है। रोहित शब्द के अन्त्य अकार अनुदात है। अत: यह शब्द अनुदातान्त भी है। अनुपसर्जन भी है। पुन: अदन्त है। और अपि प्रातिपदिक भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में वर्णवाचक तोपध अनुदात्तात्त अनुपसर्जन अदन्त रोहित प्रातिपदिक ''वर्णादनुदात्तान्तोपध ातोन:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है और तकार का नकार होता है। उससे रोहिन ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद लशक्ववद्धिते सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' इससे दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे रोहित ई स्थिति बनी। इसके बाद ''यचिजम्'' सूत्र से रोहित की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येतिच'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और नकार के णकार होने और वर्णसम्मेलन होने पर रोहिणी रूप सिद्ध होता है। पुन: ''वर्णादबुदात्तात्तोपद्यातोन:'' यह सूत्र विकल्प से प्रवर्त्तत होता है। और उसी प्रकार जब इस सूत्र की प्रवृत्ति नहीं होती है, तब रोहित शब्द के अदन्त स्त्रीत्व विवक्षा में ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से टाप् प्रत्यय होने पर रोहिता रूप सिद्ध होता है।

(10.6) ''टिडाणञ्दयसज्दघ्नञ्मात्रचतयप्ठक्कञ्कञ्क्वरप:'' (8.1.15)

सूत्रार्थ–टिढन्त ढ प्रत्ययान्त, अण् प्रत्ययान्त, अञ् प्रत्ययान्त, द्वथसच् प्रत्ययान्त, दहनञ् प्रत्ययान्त, मात्रच् प्रत्ययान्त, तयद् प्रत्ययान्त, ठक् प्रत्ययान्त, ठञ् प्रत्ययान्त, कञ् प्रत्ययान्त, क्वरप् प्रत्ययान्त, अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक स्त्रीत्य द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होना चाहिए।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। यह सूत्र ङीप् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में एक ही पद है। ''टिट्टाणञ्दयसज्दघ्नञ् मात्रच् तपप्ठक्ठञ्कञ्कवरप:'' यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है। यहाँ सूत्र में ''ऋन्नेम्योङीप्'' सूत्र से ङीप् (1/1) पद की अनुवृत्ति होती है। ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अत: (4/1) पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ सूत्र में स्त्रियाम् (7/1) अधिकार आता है। और ''ङयाप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' (4/1) पद की अनुवृत्ति आती है। ''प्रत्यय:'' (1/1) और ''परश्च'' यह अधिकार यहाँ आता है। यहाँ अनुपसर्जनात् अधिकार आता है। ''टिड्ढाणञ्दयसज्दध्नञ्मात्रध्तयप्उक्द्धञ्कञ्क्वरप:'' यह समस्त पद है। और यहाँ समाहारद्वन्दसमास है। और इसका विग्रह होता है। ''टित् च ढ: च अण् च अञ् च द्वयसच् च दध्नञ् च मात्र च् तपप् च ठक् च ठञ् च कञ् च क्वरप्'' यह टिड्ढाणञ्ढययञ्दध्नञ् मात्रच् तयप् ठक्ठञ्कञ्क्वरप्। तस्मात् टिड्ढाणञ्दयसञ्दयसञ्ढध्नग्मात्रच्तय पृ ठक्ठञ्कञ्क्वरप:''। यहाँ टित् पद समस्त है। और यहाँ बहुव्रीहि समास है। और उसका विग्रह होता है ट् इत यस्य स: टित्। अर्थात् टकार इत्संज्ञक। यहां सूत्र में टित् पद से टित प्रातिपदिक का के प्रत्यय और

टिप्पणियाँ

धातु का ग्रहण है। पुनः दिदंश में तदन्तनिधि होता है। उससे टित् से टिङतात् अर्थ होता है। सूत्र में ढ से आरम्भ होकर क्वरप् पर्यन्त सभी प्रत्यय आते हैं। और सभी जगह ''प्रत्ययग्रहणेतदन्ता ग्राह्या'' इस परिभाषा से तदन्त विधि होती है। और उससे ढप्रत्ययान्त से, अण् प्रत्ययान्त से, ठक् प्रत्ययान्तसे, ठञ्प्रत्ययान्त से, कञ्प्रत्ययान्त से, क्वरप् प्रत्ययान्त से उनमें यह अर्थ प्राप्त होता है। इन सब का भी प्रातिपदिक में अन्वय होता है। यहाँ सूत्र में अतः यह प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। उससे अतः इस अंश में ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्त विधि होती है। उससे अतः का अदन्तात् यह अर्थ होता है। ''अनुपसर्जनात'' यह भी ''प्रातिपदिकात्'' यहाँ अन्वय होती है। और सूत्रार्थ होता है–''टिङत प्रल्ययान्त अण् प्रत्ययान्त अञ्प्रत्ययान्त द्वयसज् प्रत्ययान्त ठहनञ् प्रत्ययान्त मात्रच् प्रत्ययान्त तपप्प्रत्ययान्त ठक्प्रत्ययान्त ठञ्प्रत्ययान्त कञ्प्रत्ययान्त क्वरप् प्रत्ययान्त अनुसर्जन अदन्त प्रातिपदिकतो स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होना चाहिए।

उदाहरण–नदी। कुरुचरी। सौपर्णेयी। ऐन्द्री। कुम्भकारी। औत्सी। ऊरुद्वयसी। ऊरुदध्नी। ऊरुमानी। पञ्चतयी। आक्षिकी। लावणिकी। यादृशी। इत्वरी।

सूत्रार्थ समन्वय

नदी

टिडन्त अदन्त अनुपरार्जन प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है। इस अंश का यह उदाहरण है। यहाँ पर नठट् शब्द है। इसके टकार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से लोप होता है। उससे नठ अवशेष रहता है। यहाँ टित् प्रातिपदिक है। और व्यवदेशिवत् भाव से टिदन्तम् भी है। अदन्त भी है। अनुसर्जन भी है। उस टिडन्त अनुपसर्जन अदन्त नद प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दध्नञ्मात्र च्तपप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः'' इस सूत्र से ङीप प्रत्यय होता है। उससे जद ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप हो जाता है। उससे नद ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से नद की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येतिच'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर नदी रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार देवी चोरी इत्यादि भी बोध्य है।

कुरुचरी

टिदन्त अनुसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है। इस सूत्र का यह उदाहरण है। यहाँ पर कुरुचर शब्द है। यह शब्द कुरुषु चरति इस अर्थ में कुरु सु चर से ''चरेष्ट'' सूत्र से ट प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। उससे अय शब्द टिङन्त है। और यह अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक भी है। अतः टिडन्त अनुपसर्जन अदन्त से कुरुचर शब्द से प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दध्नञ। मात्रच्तयपठक्ठञ्कञ्क्वरपः'' इस सूत्र से ङीप प्रत्यय होता है। उससे कुरुचर ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' इस सूत्र से ङीप के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों का लोप होता है। उससे कुरुचर ई स्थिति होती है। इसके

बाद ''यचियम्'' सूत्र से कुरुचर शब्द की भसंज्ञा होती है। उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्ण सम्मेलन होने पर कुरुचरी रूप सिद्ध होता है।

सौपर्णेयी

ढ प्रत्ययान्त अनुयसर्जन से अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है। यह इस सूत्र का उदाहरण है। यहाँ सौपर्णेय शब्द है। यह शब्दर सुपठर्या: अपत्यं स्त्री अर्थ में ''स्त्रीभ्यो ढक्'' इस सूत्र से ढक प्रत्यय होने रूप सिद्ध होता है। उससे यह शब्द ढप्रत्ययान्त है। और अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक भी है। अत: ढप्रत्ययान्त अनुपसर्जन अदन्त से सौपर्णेय प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ''टिड्ढाणञ् द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तय प्ढक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे सौपर्णेय ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से सौपर्णेय की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर सौपर्णेयी रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार वैनतेयी इत्यादि में भी बोध्य है।

ऐन्द्री

अणन्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है। यही इसका उदाहरण है। यहाँ पर ऐन्द्र शब्द है। यह शब्द इन्द्र: देवता अस्या: इस विग्रह में इन्द्र शब्द से सास्य देवता सूत्र से अण् प्रत्यय होने पर इन्द्र शब्द सिद्ध होता है। और यह शब्द अण् प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक संज्ञक भी है। और इसी प्रकार अण् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन से ऐन्द्र प्रातिपदिक ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे ऐन्द्र ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' सूत्र से उन दोनों इत्सांकों का लोप होता है। उससे ऐन्द्र ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचि भग्'' सूत्र से ऐन्द्र की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य के अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर ऐन्द्री रूप सिद्ध होती है।

कुम्भकारी

अणन्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है। इस अंश का यह उदाहरण है। यहां कुम्भकार शब्द है। यह शब्द कुम्भं करोति विग्रह में कुम्भ अम् कृ धातु से ''कर्मण्यण्'' सूत्र से अण् प्रत्यय होने पर कुम्भकार सिद्ध होता है। और यह शब्द अण् प्रव्ययान्त है। अदन्त भी हैं। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक संज्ञक भी है। और इसी प्रकार अण् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन से कुम्भकार प्रातिपदिक से ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठ क्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होता है। ''तस्य लोप:'' सूत्र से दोनों का लोप होता है। उस कुम्भकार ई स्थित बनी। इसके बाद ''यचि भम्'' सूत्र से कुम्भकार की भसंज्ञा होती। और उससे ''यस्येतिच'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर कुम्भकारी रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणियाँ

औत्सी

यह अञन्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है यह इस अंश का उदाहरण है। यहां पर औत्स है। अयं शब्दः उत्सस्य इयम् इस विग्रह में उत्स शब्द से ''उत्सादिभ्योऽञ्'' सूत्र से अञ् प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और यह शब्द अञ् प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक संज्ञक भी है। और इस प्रकार अञ् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन औत्स शब्द प्रातिपदिक से ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः'' इस सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे औत्स ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वर्ताद्वते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' सूत्र से उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे औत्स ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचि ञम्'' सूत्र से औत्स की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्ण सम्मेलन होने पर औत्सी रूप सिद्ध होती है।

ऊरुद्वयसी

यह द्वयसज् अन्त वाले अनुपञ्सर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ''ङीप् प्रत्यय होना चाहिए यह इसका उदाहरण है। यहाँ अरुद्वयस शब्द है। यह शब्द ऊरु प्रमाणम् अस्याः इस विग्रह में ऊरु शब्द से प्रमाण में द्वयसजदघ्नञ्मात्रनः सूत्र से द्वयसच प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और यह शब्द द्वयसच्प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिकसंज्ञक भी है। और इसी प्रकार द्वयसच्प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन से ऊरुद्वयस् प्रातिपदिक से ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्ढघ्नञ्मात्रच्यतण्ढक्कञ्क्कञ्क्वरपः'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे ऊरुद्वयस ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप'' सूत्र से उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे ऊरुद्वयस्+ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचि भम्'' सूत्र से ऊरुद्वयस् की ञसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर ऊरुद्वयसी रूप सिद्ध होता है।

ऊरुदघ्नी

यह दघ्नजत्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है यह इस अंश का उदाहरण है। यहाँ ऊरुदघ्न है। यह शब्द ऊरु प्रमाणम अस्था विग्रहे ऊरु शब्द प्रमाण में द्वयसजदघ्नञ् मात्रच.... सूत्र से दघ्नच् प्रत्यय होने पर रूप सिद्ध होता है। और इसी प्रकार अय शब्द दघ्नच्प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक संज्ञक भी है। और इसी प्रकार दघ्नच् प्रव्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन ऊरुदघ्न प्रातिपदिक ''टिड्ढाणञ्दयराज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठकठञ्कज् क्वरपः'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे ऊरुदघ्न+ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। और उससे ऊरुदघ्न ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से ऊरुदघ्न की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर ऊरुदघ्नी रूप सिद्ध होता है।

ऊरुमात्री

यह मात्रच् अन्तवाला अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय का यह अंश उदाहरण है। यहाँ पर ऊरुमात्र शब्द है। यह शब्द ऊरु प्रमाणम् अस्या इस विग्रह में ऊरु शब्द से प्रमाण में ''द्वयसजदघ्नञ्मात्रचः'' सूत्र से मात्रच् प्रत्यय होने पर ऊरुमात्र शब्द सिद्ध होता है। और यह शब्द मात्रच् प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिकसंज्ञक भी है। और इसी प्रकार मात्रच् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन ऊरुमात्र प्रातिपदिक ''टिडढाणञ् द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्कञ्कञ्क्वरपः'' इस सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे ऊरुमात्र ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते:'' सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' इससे उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे ऊरुदघ्न ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से ऊरुदघ्न की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर ऊरुदघ्नी रूप सिद्ध होती है।

पञ्चतयी

यह तयप् प्रत्ययान्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होता है वह इस अंश का उदाहरण है। यहाँ पर पञ्चतय शब्द है। यह शब्द पञ्च अवयव अस्थाः इस विग्रह में पञ्च शब्द से ''संख्याया: अवयवेतयप्'' सूत्र से तयप् प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और इसी प्रकार यह शब्द तपप् प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिकसंज्ञक भी है। और इसी प्रकार ''तयप् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन पञ्चतय प्रातिपदिक से ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः'' इस से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे पञ्चतय ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के ङकार की इत्संज्ञा होती है।

''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे पञ्चतय ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिञम्'' सूत्र से पञ्चतय की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर पञ्चतयी रूप सिद्ध होता है।

आक्षिकी

यह हक् प्रत्ययान्त अनुपसर्जन ये अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होना चाहिए यह इस अंश का उदाहरण है। यहाँ पर आक्षिक हैं। यह शब्द अक्षैः दीव्यति विग्रह में अक्ष शब्द से तेन दीव्यति खनति जयति त्रितम् सूत्र से ठक् प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और यह शब्द ठक् प्रत्ययास्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक संज्ञक भी है। एव ठक् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन से आक्षिक प्रातिपदिक से ''टिङढाणञ्दयसञ्दघ्नञ्मात्रच्त यप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे आक्षिक ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे आक्षिक ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से आक्षिक शब्द की भ संज्ञा होती है और

उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर आक्षिकी रूप सिद्ध होता है।

लावणिकी

यह ठञ् प्रत्ययान्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होना चाहिए यह अंश इसका उदाहरण है। यहाँ लावणिक है। यह शब्द लवणं पव्यम् अस्था इति विग्रहे लवण शब्द से ''लवणाट् ठञ्'' सूत्र से ठञ् प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और इसी प्रकार यह शब्द ठञ् प्रव्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिक संज्ञक भी है। और इसी प्रकार ''ठञ् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन से लावणिक प्रातिपदिक से ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच् तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे लावणिक ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' इस सूत्र उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे लावणिक ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचि यम्'' सूत्र से लावणिक की ञ संज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर लावणिकी रूप सिद्ध होता है।

यादृशी

यह कञ् प्रत्ययान्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रत्यय होना चाहिए यह इस अंश का उदाहरण है। यहाँ यादृश शब्द है। यह शब्द यत् शब्द से ''त्यदादिषु दृशोऽनालोचनेकञ्'' सूत्र से कञ् प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और इसी प्रकार अयं शब्द कञ् प्रत्ययान्त है। यह अदन्त भी है। अनुपसर्जन भी है। प्रातिपदिकसंज्ञक भी है। और इसी प्रकार कञ् प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन से यादृश प्रातिपदिक से 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दहनञ्मात्रच्तय प्ठक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे यादृश ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे यादृश ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से यादृश शब्द की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्थेति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर यादृशी रूप सिद्ध होता है।

इत्वरी

यह क्वरप् प्रत्ययान्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीप् प्रव्यय होती चाहिए उस अंश का यह उदाहरण है यहाँ पर इत्वर शब्द है। यह शब्द इण् धातु से ''इष्नशलिसर्तिभ्य: क्वरप्'' सूत्र से क्वरप् प्रत्यय होने पर सिद्ध होता है। और उसी प्रकार यह शब्द क्वरप् प्रत्ययान्त है। अदन्त भी है। अनुसर्जन भी है। प्रातिपदिकसंज्ञक भी है। और इसी प्रकार क्वरप्प्रत्ययान्त अदन्त अनुपसर्जन इत्वर प्रातिपदिक से ''टिड्ढाञ्दयसज्दध्नञ्मात्रच्तयप् ठक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय है। उससे इत्वर ङीप् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वणद्धिते'' सूत्र से ङीप् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे इत्वर ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिभम्'' सूत्र से इत्वर की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च''

सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर इत्वरी रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न

यहाँ कुछ पाठगतप्रश्न दिये जा रहे हैं।

1. ''ऋयेभ्य:'' पद में कौन सा समास है और उसका विग्रह क्या है?
2. उगित: पद में कौन समास है और कौन सा विग्रह है?
3. तोपधात् पद में कौन सा समास है और विग्रह क्या है?
4. कुञ्जकारी इसका विग्रह कौन सा है?
5. ऊरुद्वयसी का अर्थ क्या हैं?
6. पञ्चतयी का अर्थ क्या है?

पाठ सार

''ऋन्नेन्यो ङीप्'' सूत्र ङीप् प्रत्यय विधायक सूत्रों में प्रमुख सूत्र है। उसके सर्वप्रथम यहाँ पाठ में व्याख्या आती है। इसके बाद ''उगितश्च'' सूत्र की व्याख्या है। इसके बाद ''वयसिप्रथमे'' सूत्र की व्याख्या है। इसके बाद ''12 द्विय:'' सूत्र की व्याख्या है। इसके बाद ''वर्णादनुदात्तात्तोपधात् तो न:'' सूत्र का व्याख्यान है। और अन्तिम में ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र की व्याख्या है।

पाठान्त प्रश्न

यहाँ पर परीक्षा उपयोगी पूछने योग्य प्रश्न दिये जा रहे हैं।

1. ''ऋन्नेभ्योङीप्'' सूत्र की व्याख्या लिखो?
2. ''उगितश्च'' सूत्र की व्याख्या करो?
3. ''वयसि प्रथमे'' सूत्र का व्याख्यान करो?
4. ''द्विगो:' सूत्र की व्याख्यान करो?
5. ''वर्णादनुदात्तान्तोपधात् तो न:'' सूत्र की व्याख्या लिखो?
6. ''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरप:'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
7. सौपर्णेयी प्रयोग सिद्ध करो?

8. कुमारी प्रयोग को सिद्ध कीजिये?

9. भवन्ती प्रयोग की सिद्धि प्रक्रिया लिखो?

10. इत्वरी प्रयोग की सिद्धि लिखो?

11. रोहिणी, रोहिता, इन दानों प्रयोगों की सिद्धि कीजिये?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. ऋन्नेभ्यः पद में इतरेतरयोगद्वन्दसमास है और उसका विग्रह होता है–ऋच्च्च नश्च (ऋकार और नकार) ऋन्नः, तेभ्य (उनसे) ऋन्नेभ्यः।

2. उगितः पद में बहुव्रीहि समास है। और उसका विग्रह होता है–उक् इत् यस्य सः उगित्। (उक है इत्संज्ञक जिसके वह है उगितः) उगितः।

3. तोपधात् पद में बहुव्रीहि समास है। और उसका विग्रह है–तः उपधा यस्य सः तोपधः (त है उपधा में जिसके वह) तस्मात् तोपधात्।

4. कुम्भं करोति या सा कुभ्भकरी यह विग्रह का रूप सिद्ध करो?

5. ऊरु प्रमाणम् अस्थाः (जंघा है प्रमाण जिसके) ऊरुद्वयसी का अर्थ है?

6. पञ्च अवयवाः अस्था (पञ्च अवयव है जिसके) पञ्चतयी का अर्थ है।

दसवाँ पाठ समाप्त